पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशितः 1.4.2013 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

# युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

**अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट**
के तत्वावधान में
**स्वामी दीक्षानन्द जी**
10वां **स्मृति दिवस**
**रविवार, 12 मई 2013**
सायं 4.00 बजे से 7.15 बजे तक
स्थानः योग निकेतन सभागार,
वैस्ट पंजाबी बाग, रोड न. 78, दिल्ली
डॉ. अनिल आर्य-दर्शनअग्निहोत्री

वर्ष-29 अंक-20 चैत्र-2070 दयानन्दाब्द 190 1 अप्रैल से 15 अप्रैल 2013 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशितः 1.4.2013, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

## केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में
## शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 82 वें बलिदान दिवस पर जन्तर मन्तर पर हुआ प्रदर्शन

आंतकवादियों और उनके संरक्षको को सख्ती से कुचला जाये -**आर्य नेता डा.अनिल आर्य का आह्वान**

**जन्तर मन्तर पर धरने पर बैठे डा. अनिल आर्य, जयभगवान गोयल, चन्द्रप्रकाश कौशिक, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, स्वामी सौम्यानन्द जी, अभयदेव शास्त्री, कुलभूषण आर्य, लाला मेघराज आर्य, रामकुमार सिंह व रमेश योगी आदि ।**

नई दिल्ली। शनिवार , 23 मार्च 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में नई दिल्ली के ''जन्तर मन्तर'' पर अमर शहीद भगतसिंह,राजगुरू, सुखदेव के 82 वें बलिदान दिवस पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य के नेतृत्व में ''राष्ट्र रक्षा यज्ञ व आंतकवाद विरोधी दिवस'' का आयोजन किया गया । इस अवसर पर हजारों आर्य समाजियों ने पहुँच कर देश की एकता व अखण्डता की रक्षा की शपथ ली।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि समय की मांग है कि सरकार आंतकवादियों व उनके संरक्षको को सख्ती से कुचले, देश की रक्षा की कीमत पर कोई समझौता नहीं हो सकता । डा. आर्य ने केन्द्रीय मन्त्री बेनी प्रसाद वर्मा के वक्तव्य की जांच कराने की मांग की। डॉ0 आर्य ने कहा कि अपराधी जितना बडा हो उसे उतनी ही बडी सजा मिलनी चाहिये यही न्याय का तकाजा है। राजनीतिक दलों से मुस्लिम तुष्टिकरण की घातक नीति को बन्द करने की मांग की । युवा पीढ़ी को आह्वान किया कि आंतकवादियों का मुंह तोड़ उतर देने के लिए आगे आये ।

राष्ट्रवादी शिवसेना के प्रमुख जयभगवान गोयल ने कहा कि देश की वर्तमान परिस्थितियों में युवा पीढ़ी का दायित्व बढ़ गया है, अब युवको को जातिवाद, भ्रष्टाचार, क्षेत्रवाद के विरूद्ध आगे आना होगा। जिन स्वपनों के भारत की कल्पना हमारे शहीदों ने की थी उनको उन्हें पूरा करना है, श्री गोयल ने देश के शहीदों के जीवन चरित्र को पाठ्य पुस्तकों मे समुचित स्थान देने की मांग की।

**(शेष पृष्ठ 3 पर)**

**सम्बोधित करते डा.अनिल आर्य, साथ में रविन्द्र मेहता, प्रमोद चौधरी, अनिल हाण्डा, आचार्य कुंवरपाल शास्त्री आदि, द्वितीय चित्र में आंतकवाद के प्रतीक पुतले का दहन करते डा. अनिल आर्य, साथ में कै. अशोक गुलाटी, विजेन्द्र योगाचार्य, सुशील शर्मा (शामली) आदि।**

# आ गया सबका नववर्ष ! स्वागत की तैयारी करें सहर्ष!! – डॉ. जगदीश शास्त्री

आर्यसभ्यता प्राचीन ही नहीं प्राकृतिक (दंजनतंस) भी है। यहाँ की सम्पूर्ण जीवन पद्धति प्रकृति के साथ अनुकूलित है। प्रकृति में परिवर्तन के साथ–साथ जीवन में परिवर्तन, भोजन में परिवर्तन, रहन–सहन, वेश–भूषा में परिवर्तन और ऋतु के अनुसार पर्व त्योहारों में परिवर्तन यहाँ की विशेषता है। जब सर्दी का अन्त होने लगता है, सूर्य उत्तरायण में आता है, दिन बढ़ने और रात घटने लगती है, प्रकाश अधिक और अन्धकार कम होने लगता है। जब दिन–रात, अन्धकार–प्रकाश और सर्दी–गर्मी सभी सम हो जाते हैं, सारी धरती (प्रकृति) वातानुकूलित हो जाती है, तब ऋतुओं का राजा वसन्त आता है। तब न अधिक सर्दी रहती है न असह्य गरमी। सभी प्राणियों में नवजीवन का संचार हो जाता है। जीव–जन्तु प्रसन्नता से खेलने–कूदने लगते हैं। पछी चहचहाने लगते हैं। पेड़–पौधों में नई कोपलें और कलियाँ खिलने लगती हैं। वृक्ष–वनस्पति नई पत्तियों और फूलों के रंगीन परिधान में सुशोभित होने लगते हैं। रंग–विरंगे फूलों के सुगन्ध से दिशाएँ दमकने–महकने लगती हैं। मकरन्द पान कर कीट–पतंग व भौंरे मस्त हो जाते हैं। प्रकृति में सर्वत्र नवीनता छा जाती है। पशु–पक्षी, कीट–पतंग से लेकर मनुष्य समाज तक सबमें नव–सन्तति सृजन के लिए प्रजनन किया जाता है। मनुष्य समाज इसी समय (फाल्गुन–चैत्र महीनों में) विवाह रचाता है और आनन्द मनाता है। नवदम्पत्ती नवसन्तति सृजन का सूत्रपात करते हैं.......ऐसे ही मौसम में, ऐसे ही वातावरण में जब सब कुछ जीवन्त होता है, सबकुछ नवीन होता है, पूरी प्रकृति का साथ होता है तब आर्यलोग चैत्रमास की पहली तिथि को नववर्ष का उत्सव मनाते हैं। यही आर्यसभ्यता के अनुसार नववर्ष के आरंभ का दिन है। यही चैत्रमास शुक्लपक्ष की पहली तिथि है जब परब्रह्म ने 1,96,08,53,111 वर्ष पहले सृष्टि का सृजन किया था। मनुष्य समाज धरती माता की कोख से जन्म लिया था। सूर्य, चाँद, धरती और सम्पूर्ण सृष्टि को अपनी आँखों से निहारा था। परमात्मा का धन्यवाद किया था और दिनों की गणना आरंभ की थी। अतः यह नववर्ष का दिन सृष्टि का जन्मदिन है। सूर्य और चाँद का जन्मदिन है। धरती और आकाश का जन्मदिन है। पूरी मानवजाति का जन्मदिन है। मानवता और मानवसभ्यता का जन्मदिन है। इसीलिए इसे 'मानवसंवत्,' व 'सृष्टिसंवत्' कहते हैं। ईश्वर की यह सृष्टि प्राणीमात्र के लिए है। पूरी मनुष्य जाति के लिए है। इसलिए इस दिन सभी धरतीवासी नववर्ष मनाया करते थे। धरती पर रहने वाले सभी मनुष्यों को यह जानना चाहिए कि जुलियन कैलेंडर से पहले जैसे चैत्रमास के प्रथम दिन नववर्ष का आरंभ मनाते थे वैसे ही अब भी प्रथम चैत्र को नववर्ष के रूप में मनाना चाहिए। इसे अन्ताराष्ट्रीय नववर्ष घोषित किया जाना चाहिए। जबसे लोग देश, जाति और सम्प्रदाय के टुकड़ों में बंट गए हैं तबसे मानवसंवत् सृष्टिसंवत् को मनाना छोड़ दिया और अपने सम्प्रदाय के जन्मदिन को तथा सम्प्रदाय के संस्थापक व्यक्ति के जन्मदिन को ही नववर्ष के रूप में मनाने लगे हैं। प्रकृति के प्रतिकूल परिस्थितियों में स्वकल्पित नववर्ष मनाते हैं–जैसे कि एक जनवरी का दिन। इस समय प्रकृति पूरी तरह प्रतिकूल रहती है। ठण्ढ के कारण पशु–पक्षी ही नहीं प्रतिवर्ष हजारें मनुष्य इस मौसम की बलि चढ़ जाते हैं। मनुष्य ही नहीं पशु–पक्षी से लेकर वृक्ष–वनस्पति तक अपने जीवन की सुरक्षा की चिन्ता में देखे जाते हैं। ऐसे कष्टकर वातावरण में, निष्ठुर मौसम में केवल साधन सम्पन्न धनाढ्य लोग ही प्रसन्न हो सकते हैं। वातानुकूलित महलों के बन्द कमरों में मदिरा और मांस जैसे अप्राकृतिक, अमानवीय खान–पान कर मौज–मस्ती का दिखावा मात्र कर सकते है। इस नववर्ष में प्रकृति का साथ कहाँ? सांप्रदायिक अन्धविश्वास तथा कट्टरता व्यक्ति को कितना विवेकहीन और निष्ठुर बना देता है यह इसीसे पता चलता है कि वंसतऋतु जैसे सबसे सुखद ऋतु में सनातनकाल से होने वाला सच्चा नववर्ष को छोड़कर साम्प्रदायिक दुराग्रह के कारण साल के सबसे दुःखद ऋतु में दिसंबर–दसवाँ महीना को बारहवां महीना घोषित कर दिया और ग्यारहवां महीना जनवरी को नववर्ष का प्रथम महीना घोषित कर दिया। जबकि सच्चाई इसरो सर्वथा भिन्न है। स्वयं दिसंबर मास भी तो संकेत कर रहा है कि अभी दसवाँ अंबर (दसम्बर) ही है अर्थात् वर्ष का दसवाँ महीना। सितंबर–सप्त अंबर अर्थात् सातवाँ महीना, अक्टूबर–अष्ट अंबर = आठवाँ महीना और नवंबर–नव अंबर = नवाँ महीना है। तभी तो दिसंबर में ग.उें मनाते हैं। ' ग' का अर्थ रोमन में 'दस' होता है और 'उें=मास' का अर्थ 'महीना' है ही। अर्थात् ग.उें का अर्थ–दसवां महीना है। स्पष्ट है दिसम्बर–दसवाँ मास है तो जनवरी=ग्यारहवाँ और फरवरी बारहवाँ महीना है। मार्च का अर्थ–'आगे बढ़ना' होता है। मार्च से नववर्ष आगे बढ़ता जाता है। इसी दिन से शिक्षा का नवीन सत्र आरंभ होता है। व्यापार–सत्र बदलता है। बही–खाते बदले जाते हैं। मार्च महीना से सरकार नये बजट के प्रावधानों का कियान्वयन करती है। मार्च यानि चैत्र का महीना। वसन्तऋतु। वर्ष का पहला महीना यही है। इसी महीने से सभी नवसत्रों का आरंभ होता है। चैत्र से ही सृष्टिसंवत् बदलता है। मानवसंवत् और युगसंवत् बदलता है। इसी दिन विक्रमसंवत् का नववर्ष भी आरंभ होता है; क्योंकि सनातन वैदिकधर्म के ज्योतिर्धर, आर्यावर्तीय सभ्यता और संस्कृति के रक्षक, जन–गण मन के अधिनायक, देशभक्त राजा विक्रमादित्य का आज के दिन ही राज्याभिषेक हुआ था। उन्होंने शक आक्रांताओं को पराजित कर स्वराज्य की स्थापना की थी। भारतीय संविधान में शकसंवत् को राष्ट्रीयसवंत् माना है यह बड़ी लज्जा एवं पराक्रमी पूर्वजों के प्रति कृतघ्नता की बात है। ठीक ही है यदि हम ऐसे कृतघ्न न होते तो मुगलों और अंग्रजों की अधीनता में पुनः–पुनः क्यों फंसते? बारम्बार पराधीन क्यों होते?स्मरण रहे कि ये शक आक्रान्ता और ईसामसीह के अनुयायी ही थे जिन्होंने इस पवित्र भारत भूमि पर सैकड़ों वर्ष अत्याचारपूर्ण शासन करते रहे। सतत् संघर्ष और असंख्य वीरों के बलिदान के पश्चात् जिनसे हम स्वतन्त्र हुए–यह ईसवी सन् और शकसंवत् हमारी उसी परतन्त्रता के स्मारक चिह्न हैं। पराधीनता के इन निशानों को शीघ्र मिटाने की आवश्यकता है न कि मनाने की।. .....अस्तु। यह मौसम, यह सूर्य, यह धरती, सजी हुई प्रकृति, ज्योतिष की गणना व महीनों के नाम, प्राचीन आचार तथा लोक और सरकार का व्यवहार, सबका यही कहना है कि–यही है नववर्ष ! यही है नववर्ष ! अतः आईये चैत्र को प्रथम मास के अनुसार कालनिर्णय (कैलेण्डर) का विपुल मात्रा में निर्माण और वितरण कर प्रचार करें। प्रत्येक समाज में जगह–जगह इसका आयोजन करें। अभिनंदन–पत्रों का प्रेषण तथा नववर्ष की शुभकामनाओं का आदान–प्रदान कर नववर्ष मनाएं।

ध्यातव्य– 1582 ई0 में पोप ग्रेगरी अष्टम ने जुलियन कैलेण्डर की जगह ग्रिगेरियन कैलेण्डर चलाया। जूलियन कैलेण्डर का आधार वैदिकज्योतिष व रोमन कैलेण्डर था। इसिलिए जूलियन कैलेण्डर में मार्च वर्ष का पहला महीना होता था। पोप ने ईसाईयत का प्रभाव फैलाने के लिए ईसामसीह के जन्म वाले दिसम्बर मास X-MASS को अन्तिम मास और जनवरी को प्रथम महीना घोषित किया। वस्तुतः महीनों का क्रम निम्नप्रकार है–

1.चैत्र–डंतबी 2.बैशाख–।चतपस 3.ज्येष्ठ–डंल 4.आषाढ–श्रनदम 5. श्रावण–July(Quintilis=five) 6.भाद्र–August-(sextillus=six) 7.आश्विन &September 8.कार्तिक–October 9.मार्गशीर्ष–November 10. पौष–December 11.माघ–January 12.फाल्गुन–February

जुलाई का लैटिन नाम Quintius है जिसका अर्थ है–पॉच। अर्थात् जुलाई पाचवॉ महीना है। अगस्त का लैटिन नाम Sextillus है जिसका अर्थ है–छः। अर्थात् अगस्त छठा महीना है। लैटिन Septem, Octo, Novem, Decem का संस्कृत और अंग्रेजी में क्रमशः सात, आठ, नव, दश अर्थ है। अर्थात~ September. October, November, December ये क्रमशः सातवाँ, आठवाँ, नवाँ, दशवाँ महीना हैं। जुलाई जूलियस सीजर के नाम पर और अगस्त जूलियस ऑगस्टस् के नाम पर रखा गया है। शेष महीनों के नाम विभिन्न रोमन देवी–देवताओं के नाम पर रखा गया है। अस्तु। सृष्टिसंवत्–1,96,08,53,114, कलियुगसंवत्–5114, विक्रमसंवत्–2070 तथा

चण्डीगढ़, चलभाषांक–9417621632

## नवसंवत् पर 7 अप्रैल को संस्कृति रक्षा सम्मेलन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उतर प्रदेश के तत्वावधान में रविवार, 7 अप्रैल 2013 को प्रातः 8 से दोपहर 2 बजे तक आर्य समाज, नया गंज, गाजियाबाद में बहुकुण्डीय यज्ञ आचार्य सत्यवीर शर्मा करवायेगे व डा.वरूणवीर की अध्यक्षता में संस्कृति रक्षा सम्मेलन होगा जिसमें आचार्य वागीश जी (एटा), श्री मायाप्रकाश त्यागी, डा.अनिल आर्य, डा.आर.के.आर्य, श्री तेजपाल सिंह आर्य आदि सम्बोधित करेंगे। संचालन डा.वीरपाल विद्यालंकार करेंगे। सभी आर्य जन सपरिवार पहुंचे।

**निवेदकः**

| | | |
|---|---|---|
| **आनन्दप्रकाश आर्य** | **प्रवीन आर्य** | **प्रद्योत पाराशर** |
| प्रान्तीय अध्यक्ष | प्रान्तीय महामंत्री | प्रान्तीय कोषाध्यक्ष |

## आर्य नेता दीपक भारद्वाज की हत्या

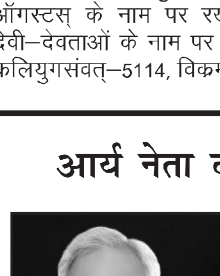

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के पूर्व उपप्रधान, आर्य समाज मोती बाग,नई दिल्ली के अधिकारी व परिषद् के अभिन्न सहयोगी श्री दीपक भारद्वाज की गत् 26 मार्च 2013 को उनके निवास नितेश कुन्ज, रजोकरी, नई दिल्ली में अज्ञात हत्यारों ने गोली मार कर हत्या कर दी। अन्तेष्टि संस्कार 27 मार्च 2013 को दोपहर 3 बजे निगमबोध घाट पर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डा. अनिल आर्य, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विजय गोयल, श्री राजसिंह आर्य, महेन्द्र भाई, रामकुमार सिंह आदि उपस्थित थे ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि। दिल्ली पुलिस से अपील है कि हत्यारों को अविलम्ब गिरफ्तार कर सजा दिलवाये।

**विनम्र श्रद्धांजलि- महेन्द्र भाई, महामन्त्री**

# असंभव है प्रतिशोध से प्रतिशोध को समाप्त करना

–सीताराम गुप्ता

धाम्मपद में कहा गया है, **''न हि वैरेण वैराणि शाम्यन्तीह कदाचन:''** अर्थात् इस संसार में वैर से वैर कभी शांत नहीं होता। इसी प्रकार अन्य नकारात्मक वृत्तियों से नकारात्मकता का समापन नहीं किया जा सकता। वैर से वैर, क्रोध से क्रोध, घृणा से घृणा अथवा हिंसा से हिंसा को मिटाना असंभव है। हाँ इस ग़लत प्रयास में हम अपने स्तर से अवश्य गिर जाएँगे। बुराई को बुराई से जीतना असंभव है फिर हम क्यों बुराई को जीतने के लिए बुराई का सहारा लें? बदले की भावना या बदला लेने की इच्छा स्वयं में एक हानिकारक तत्त्व है।

महाभारत में महर्षि भरद्वाज के पुत्र द्रोणाचार्य की कथा मिलती है जिन्होंने कौरव और पांडव राजकुमारों को धनुर्विद्या का प्रशिक्षण दिया और अंत में कुरुक्षेत्र के युद्ध में धृष्टद्युम्न के हाथों मारे गए। आश्चर्य का विषय द्रोणाचार्य की मृत्यु नहीं लेकिन अजेय योद्धा महारथी द्रोणाचार्य अपने आश्रम के सहपाठी द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न के हाथों क्यों मारे गए यह अवश्य विचारणीय है। भरद्वाज आश्रम में आचार्य द्रोण और पंचाल नरेश के पुत्र द्रुपद साथ-साथ शिक्षा ग्रहण करते थे। दोनों अच्छे मित्र बन गए। एक दिन द्रुपद ने द्रोण से कहा कि जब वह पांचाल देश का राजा बनेगा तो आधा राज्य उसे दे देगा।

शिक्षा पूर्ण होने पर दोनों ने अपनी-अपनी राह ली। द्रोण का विवाह हुआ और उसका एक पुत्र हुआ जिसका नाम रखा गया अश्वत्थामा। द्रोण अपने परिवार को बहुत प्यार करते थे और उन्हें सुखपूर्वक रखना चाहते थे लेकिन यह संभव नहीं था क्योंकि द्रोण बहुत ग़रीब थे। कालांतर में द्रुपद पांचाल राज्य के सिंहासन पर बैठा। यह जानकर द्रोण बड़ा प्रसन्न हुआ और वह द्रुपद से मिलने पांचाल जा पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर आधा राज्य अथवा सहायता तो दूर अपितु द्रुपद के हाथों अपमानित और लज्जित होना पड़ा। द्रुपद ने कहा कि मित्रता बराबर वालों में होती है। अपमानित द्रोण खून का घूँट पीकर रह गया। उसके मन में प्रतिशोध की ज्वाला भड़क उठी।

बाद में आचार्य द्रोण हस्तिनापुर में राजकुमारों को धनुर्विद्या सिखाने लगे और शिक्षा पूरी होने के उपरांत गुरू दक्षिणा के रूप में पांचाल नरेश द्रुपद को क़ैद करके लाने को कहा। अर्जुन ने द्रुपद को पराजित करके उसे मंत्री सहित क़ैद कर लिया और आचार्य द्रोण के सम्मुख लाकर खड़ा कर दिया। द्रोण ने यद्यपि उसे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाई और अपना प्रतिशोध पूरा मानकर द्रुपद को सम्मान के साथ विदा कर दिया लेकिन द्रुपद इस अपमान को सहन न कर सका। वह घृणा से भर उठा और बदले की आग में झुलसने लगा। द्रुपद ने अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बना लिया द्रोण से बदला लेना। द्रुपद ने कठोर तप और व्रत किए ताकि उसके ऐसा शक्तिशाली पुत्र हो जो द्रोण का वध कर सके। उसकी कामना पूर्ण हुई। उसके पुत्र धृष्टद्युम्न ने कुरुक्षेत्र के युद्ध में आचार्य द्रोण का वध किया।

क्या द्रोण की इस प्रकार की मृत्यु के लिए द्रोण स्वयं उत्तरदायी नहीं? क्या इसके मूल में द्रोण की लालसा, असहिष्णुता व बदले की भावना विद्यमान नहीं? माना द्रुपद ने उत्साहातिरेक, आवेश अथवा बड़प्पन की भावना से आधा राज्य देने का आश्वासन दे डाला लेकिन क्या मित्रों के बीच इस प्रकार का बँटवारा व्यावहारिक है? क्या भावावेश में किया गया यह निर्णय अस्वाभाविक नहीं प्रतीत होता? अपने परिवार के लिए सुख-सुविधाएँ जुटाने की कामना में एक राजा के सामने मित्रता का वास्ता देकर क्या द्रोण ने अपनी गरिमा को ठेस नहीं पहुँचाई?जब एक राजा ने ग़रीब ब्राह्मण को मित्रा स्वीकार करने से मना कर दिया तो वह अपमान से भर उठा। आख़िर क्यों?

आज दुनिया में अनेक लोग दूसरों को सब्ज़-बाग़ दिखाते हैं और असंख्य लोग उनके झाँसे में आकर लुट-पिटकर चुपचाप बैठ जाते है। यह उनके लोभ का ही तो परिणाम होता है। बिना कमाए या कम मेहनत करके धनी होने की आकांक्षा ही तो होती है। बिना कमाए या कम मेहनत करके सुखपूर्वक जीने की चाह होती है। यही तो द्रोण की भी चाहत थी। पर क्या यह स्वाभाविक है?क्या यह उचित है? क्या इससे मनुष्य का स्वाभाविक विकास संभव है? इस प्रकार की असंख्य अस्वाभाविक कामनाएँ, लालसाएँ व वासनाएँ ही मनुष्य के पतन का कारण बनती हैं इसमें संदेह नहीं। फिर बदले की भावना आग में घी का काम करती है।

द्रोण बदला लेना चाहता था। प्रतिशोध कभी पूर्ण नहीं होता। आज आप प्रतिशोध ले रहे हैं तो कल दूसरा प्रतिशोध ले रहा है। फिर आप पुन: प्रतिशोध की तैयारी में लग जाते हैं और ये सिलसिला कभी समाप्त नहीं होता। पूरा जीवन प्रतिशोध की अग्नि को समर्पित हो जाता है लेकिन पिफर भी प्रतिशोध पूरा नहीं होता। मनुष्य समाप्त हो जाता है लेकिन प्रतिशोध नहीं क्योंकि यह पीढ़ियों तक चलता जाता है जिसमें अगली पीढ़ियाँ तक स्वाह हो जाती हैं। द्रोण का प्रतिशोध भी द्रुपद तक जाकर नहीं रुका और द्रुपद का प्रतिशोध भी द्रोण तक जाकर नहीं थमा। वह प्रतिशोध ही क्या जो थम जाए?

अपने पिता द्रोण की मृत्यु से आहत अश्वत्थामा ने धर्म विरुद्ध रात्रि में सोते हुए धृष्टद्युम्न को पैरों से कुचलकर मार डाला और साथ ही द्रौपदी के पाँचों पुत्रों का वध भी कर दिया। इसके मूल में थी द्रोण की लिप्सा। द्रोण की आधे राज्य को पाने अथवा कुछ सहायता की लिप्सा, कामनापूर्ति में बाधा से उत्पन्न अपमान बोध, घृणा, अपमान बोध और घृणा से उत्पन्न प्रतिशोध की भावना, प्रतिशोध की पूर्ति पर दूसरे पक्ष की घृणा और बदले की भावना ने न केवल द्रुपद का अपितु स्वयं द्रोण का भी सर्वनाश कर डाला। इसके अभाव में संभव है महाभारत जैसा युद्ध होता ही नहीं और उस युद्ध से उपजी भयानकता देखने-सुनने में न आती जिसने धरती को श्रेष्ठ योद्धाओं से खाली कर दिया।

ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

**( पृष्ठ 1 का शेष )**

हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक ने कहा कि जब तक देश में एक समान आचार सहिंता लागू नहीं होगी तब तक समस्या का हल नहीं होगा, उन्होंने बंगलादेशी घुसपैठियों को देश की सीमा से बाहर निकालने की मांग की, वह आज देश की सुरक्षा, अखण्डता के लिए खतरा बन चुके हैं। उन्होंने कहा कि मुस्लिम वोटों के चक्कर में सभी दल मर्यादा की सीमा पार कर चुके हैं।

धरने के अध्यक्ष वैदिक विद्वान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने कहा कि अमर शहीदों का बलिदान युवाओं के लिए विशेष प्रेरणा देने वाला है । देश व धर्म पर बलिदान देने वालों में उनका अग्रणी स्थान है, आंतकवाद से जूझने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने बलिदानी वीरों से प्रेरणा लें तथा धर्मान्धता का मुकाबला करें।

आर्य संन्यासी स्वामी वेदानन्द जी व स्वामी सौम्यानन्द जी ने कहा कि आज धर्म परिवर्तन के नाम पर देश में आंतक फैलाने वालों को मुंह तोड़ उतर देने की आवश्यकता है इसके लिए आर्य युवा आगे आयें। वैदिक विद्वान कुंवरपाल शास्त्री ने 'राष्ट्र रक्षा यज्ञ' करवाया तथा कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में जेल जाने वाले 80 प्रतिशत आर्य समाजी थे,आज राष्ट्र धर्म का पालन भी आर्य जनों को करना व करवाना भी है ।

आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी ने कहा कि जातिवाद पर आधारित किसी भी प्रकार का आरक्षण समाप्त होना चाहिये ये देश की एकता में बाधक है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय महामंत्री श्री प्रवीण आर्य ने केन्द्र सरकार से मांग की कि जम्मू–कश्मीर में राष्ट्पति शासन लगाकर उसे सेना के हवाले किया जाये। तथा पाकिस्तान को मूह–तोड जवाब दिया जाये। आचार्य गवेन्द्र शास्त्री,वीरेन्द्र विक्रम,बलराज सेजवाल, कै.अशोक गुलाटी, प्रभा सेठी,यशोवीर आर्य,रामकुमार सिंह आर्य ,प्रमोद चौधरी,अनिल हाण्डा ,स्वर्ण गम्भीर आदि ने भी अपने विचार रखे तथा विभिन्न वक्ताओं ने देश भक्ति का जज्बा युवा पीढ़ी में भरने, शहीदों को इतिहास में सही स्थान देने, आंतकवाद का सख्ती से उतर देने की मांग की तथा पड़ोसी देशों से स्वाभिमान की रक्षा करते हुए समझौते करने की मांग की । प्रधानमन्त्री व केन्द्रीय गृहमन्त्री को ज्ञापन भी दिया गया ।

इस अवसर पर राष्ट्रीय महामंत्री महेन्द्र भाई,देवेन्द्र भगत,विमल कुमार,अमरनाथ बत्रा, रविन्द्र मेहता पूर्व विधायक श्री सुशील चौधरी, राजेश मेहन्दीरता, सुरेन्द्र शास्त्री, त्रिलोक सिंह,प्रदीप कुमार,वेदप्रकाश आर्य,यज्ञवीर चौहान,हरिचन्द आर्य,गजेन्द्र चौहान,राकेश भटनागर,सत्यपाल सैनी,भूदेव आर्य,चन्द्रमोहन कपूर आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

## दिल्ली आर्य कन्या शिविर

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में आर्य कन्या शिविर दिनांक 19 मई से 26 मई 2013 तक आर्य समाज, सन्देश विहार, पीतमपुरा, दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है । सम्पर्क: प्रभा सेठी-09871601122

## चुनाव सम्पन्न

**महिला आर्य समाज सैक्टर-22 ए, चण्डीगढ़** के चुनाव में संरक्षक- श्रीमती सुशीला भट्ट, प्रधाना-श्रीमती स्वर्णलता सव्वरबाल, उपप्रधाना-श्रीमती सुनीता चन्दवानी, मन्त्राणी-श्रीमती सन्तोष सेठी, उपमन्त्राणी-श्रीमती वीणा त्रेहन और कोषाध्यक्षा- श्रीमती उर्मिला अरोड़ा सर्वसम्मति से चुने गए।

# आर्य समाज, सफदरजंग एनक्लेव में बोधोत्सव सम्पन्न

रविवार, 24 मार्च 2013, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में आर्य समाज, सफदरजंग एनक्लेव में ऋषि बोधोत्सव श्री अशोक गोयल की अध्यक्षता में सौल्लास सम्पन्न हुआ। आचार्य वीरेन्द्र, आचार्य ओमप्रकाश यजुर्वेदी, प्रि.श्यामलाल के प्रवचन हुए। चित्र में सम्बोधित करते डा.अनिल आर्य व डी.ए.वी.के पूर्व प्रधान श्री जस्टिस आर.एन.मितल का स्वागत करते प्रधान रविदेव गुप्ता, डा.अनिल आर्य, कविता कुमारी, रामचन्द्र सिंह। सचालंन महामन्त्री श्री चतरसिंह नागर ने किया व मण्डल के प्रधान श्री जितेन्द्र डावर ने आभार व्यक्त किया ।

# महात्मा वेदभिक्षु जयन्ती सम्पन्न व महापौर सविता गुप्ता का हुआ अभिनन्दन

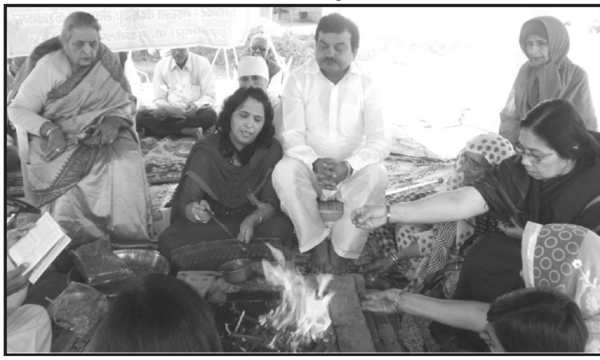

रविवार,17 मार्च 2013, दयानन्द संस्थान व जनज्ञान के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षु: जी का जयन्ती समारोह वेद मन्दिर, इब्राहिमपुर, दिल्ली में सौल्लास सम्पन्न हुआ। चित्र में मुख्य यजमान श्रीमती ऋचा व श्री राकेश भार्गव साथ में पं. राकेश रानी जी। डा. अनिल आर्य, श्री रिखबचन्द जैन, डा. हर्षवर्धन, श्री भगतसिंह कोशयारी, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, डा. वीरपाल विद्यालंकार, श्री मायाप्रकाश त्यागी आदि उपस्थित थे। व्यवस्थापक दिव्या आर्या ने संचालन किया। द्वितीय चित्र में रोनियार वैश्य सभा के आर्य समाज, न्यू डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में महापौर सविता गुप्ता का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, मकेन्द्र कुमार, चिल्ली गुप्ता व अश्विनी गुप्ता ।

# श्री देवेन्द्र भगत का अभिनन्दन व डा.सुन्दरलाल कथूरिया की पुस्तक का लोकापर्ण

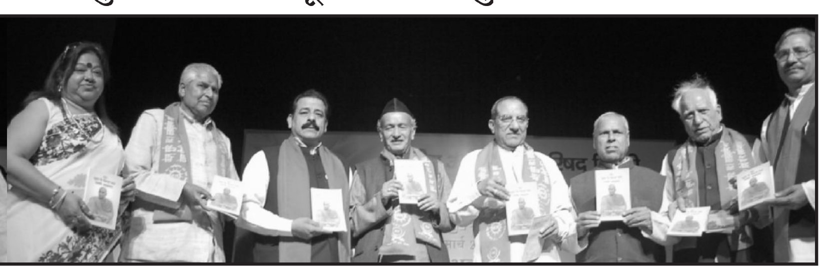

परिषद् के प्रेस सचिव श्री देवेन्द्र भगत का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य व श्री मायाप्रकाश त्यागी। द्वितीय चित्र में डा. सुन्दरलाल कथूरिया की पुस्तक ''शून्य से शिखर तक'' का लोकार्पण करते डा. विजय कुमार मल्होत्रा, श्री भगतसिंह कोशयारी, डा. अनिल आर्य, प्रवीन आर्या, मायाप्रकाश त्यागी, रविन्द्र मेहता व महेन्द्र भाई जी।

# आर्य समाज मदनगीर व सुन्दर विहार का उत्सव सौल्लास सम्पन्न

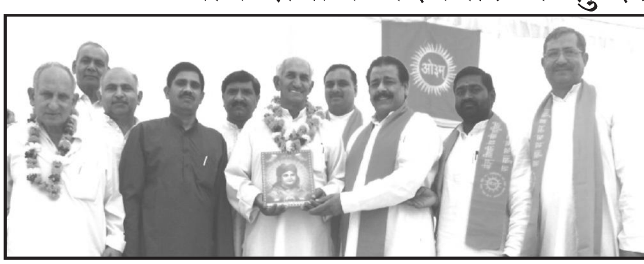

रविवार, 31 मार्च 2013, आर्य समाज, मदनगीर, दक्षिण दिल्ली के उत्सव में प्रधान श्री हरिचन्द आर्य को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य व कवि विजय गुप्त, चतरसिंह नागर, प्रि.श्यामलाल आर्य, देशपाल राठौर, ओमप्रकाश यजुर्वेदी, रामकुमार सिंह, प्रकाशवीर शास्त्री व महेन्द्र भाई जी। द्वितीय चित्र में आर्य समाज सुन्दर विहार के प्रधान जी का स्वागत करते डा. अनिल आर्य, रवि चड्डा, राजेन्द्र लाम्बा, अमरनाथ बत्रा,जगदीश वर्मा, चन्द्रशेखर शर्मा व रामकुमार सिंह।

## शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री दिनेश सतीजा आयु-47 वर्ष सुपुत्र श्री रामकृष्ण सतीजा, जनकपुरी, दिल्ली का गत 28 मार्च को निधन हो गया ।
2. माता जयदेवी खुराना (माता श्री सुनील खुराना) का गत दिनों निधन हो गया।

**युवा उदघोष की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि ।**

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970